B.A. Part – III
Philosophy Paper – V

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Verification Theory of Religious Language. (Part – I)

धार्मिक चिन्तन के क्षेत्र में भाषा विश्लेषण के रूप में एक नयी प्रवृति का विकास हुआ है, इनके प्रभाव से अन्य क्षेत्रों की तरह धर्म मीमांसा का क्षेत्र प्रभावित हुआ है, इस प्रवृति के अन्तर्गत धार्मिक भाषा के विवेचन पर ज्यादा बल दिया गया है, वस्तुतः प्रत्येक धर्म में कुछ भावात्मक अभिव्यक्तियाँ होती है, अब जब इनका विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन करने का प्रयास किया गया तो इस क्रम में इन अभिव्यक्तियों की सार्थकता तथा निरर्थकता का प्रश्न भी उठाया गया। इस क्रम में समसामयिक दर्शन सम्प्रदाय तार्किक प्रत्यक्षवाद (Logical Positivism) ने हमारे समक्ष "सत्यापन – सिद्धान्त" के रूप में अर्थ की एक कसौटी रखी। अतः धार्मिक कथनों की सत्यापनीयता का प्रश्न वस्तुतः इन कथनों की अर्थपूर्णता के प्रश्न से सम्बन्धित है क्या धार्मिक कथन सत्यापनीय है। वस्तुतः अपने अन्दर इस प्रश्न को समाविष्ट किए हुए है कि क्या धार्मिक – कथन

अर्थपूर्ण (सार्थक) है?

अब हम उक्त प्रश्न की विवेचना करेंगे।

हम जानते हैं कि भाषा के अन्तर्गत विचार की अभिव्यक्ति वाक्यों अथवा कथनों के द्वारा सम्भव होती है। धार्मिक भाषा अत्यन्त ही जटिल होते हैं। इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार के वाक्य सम्मिलित हैं। इनमें कुछ वाक्य नैतिक उपदेश सम्बन्धी होते हैं जैसे हम सभी - प्राणियों के साथ प्रेम करना चाहिए। कुछ वाक्य पूजा अर्चना से सम्बन्धित है जैसे — "हे प्रभु तुम्हीं मेरा सर्वस्व है, तुम्हारे सिवा मेरा कुछ भी नहीं है" लेकिन कुछ ऐसे भी वाक्य होते हैं जो धार्मिक विषय के सम्बन्ध में कोई सूचना - अथवा विवरण देते हैं जैसे — "संसार के पीछे एक ईश्वर है।" "ईश्वर सर्वज्ञ है" इत्यादि। ये वाक्य वस्तुतः संसूचनात्मक अथवा वर्णनात्मक स्वरूप के होते हैं।

इन अनेक प्रकार के वाक्यों में तीसरी कोटि के वाक्य "धार्मिक कथन" के रूप में जाने जाते हैं क्योंकि इनका प्रकट रूप उन वाक्यों की तरह है जिसे हम आधुनिक तर्कशास्त्र की भाषा में कथन कहते हैं। इन कथनों का प्रकट रूप बिल्कुल साधारण तथ्यात्मक कथनों की तरह का है इनसे ऐसा प्रतीत होता है कि किसी तथ्य के सम्बन्ध में ~~ये~~ हमें कोई सूचना दे रहे हैं।

तार्किक प्रत्यक्षवादियों के समक्ष समस्या धार्मिक कथनों को लेकर है यानी क्या ये कथन उनकी अर्थपूर्णता की कसौटी पर अर्थपूर्ण है? यों तो विभिन्न प्रत्यक्षवादी दार्शनिकों में अर्थपूर्णता की विभिन्न कसौटियों

को सूत्रबद्ध किया है, फिर भी यहाँ हम प्रश्नानुसार सिर्फ एयर द्वारा प्रस्तुत सत्यापनीयता के आधार पर इस प्रश्न की विवेचना करेंगे—

एयर की मान्यता है कि सत्यापनीयता के सिद्धान्त द्वारा प्रस्तुत कसौटी के आधार पर यह निश्चित किया जा सकता है कि कोई कथन तथ्यात्मक "दृष्टि से सार्थक है अथवा नहीं ? एयर ने अपने इस सत्यापनीयता सिद्धान्त का विभिन्न रूपों में सूत्रीकरण किया है सर्वप्रथम इन्होंने व्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक "सत्यापनीयता की बात की है एक कथन तब व्यवहारिक रूप से सत्यापित माना जाएगा जब उसकी सत्यता-असत्यता को निर्दिष्ट करनेवाली आनुभविक स्थिति को बताया जा सके। निश्चित रूप से इस अर्थ में एक धार्मिक कथन की व्यवहारिक सत्यापनीयता की बात को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वस्तुतः किसी भी ऐसे आनुभविक स्थिति को नहीं बताया जा सकता जो एक धार्मिक कथन जैसे "ईश्वर अस्तित्ववान है" की सत्यता या असत्यता को सिद्ध कर दे।

एयर ने सैद्धान्तिक सत्यापनीयता की बात भी की है इनके अनुसार वास्तविक अनुभव के द्वारा यदि सिद्धान्ततः वाक्य (कथन) का सत्यापन सम्भव हो, तो ऐसी स्थिति में कथन सत्यापनीय है और इस आधार पर सार्थक माना जाएगा। लेकिन जहाँ तक धार्मिक कथनों का प्रश्न है ऐसी कोई भी इन्द्रियानुभूति सम्भावित भी प्रतीत नहीं होती है जिसके होने से हम इन कथनों को सत्य या असत्य कह सके। अतः इस अर्थ में भी धार्मिक कथन सत्यापनीय सिद्ध नहीं होते।

— To be continued —